ॐ

।। श्री सद्गुरु वंदना ।।

जय आसारामं सत् सुखधामं पूज्यपाद प्रिय संता ।
जय आर्तकृपालु दीनदयालु मंगलसदन अनंता ।।
जय जय गुरुदेवं नौमि तमेवं परम तेजमयरूपा ।
तप-ज्ञान निधाना योग सुजाना भक्ति महान अनूपा ।।

जो तत्व बूझावत योग करावत भक्ति अनन्य दृढ़ावत हैं ।
जिनकर सत्संगा कलिमल भंगा भाग्यवान नर पावत हैं ।।
जिनके गुण गावत प्रीति बढ़ावत भक्त सकल आनंद मगन ।
सुमिरहि बहु भातिं दिन अरु राति गदगद कंठ न एक वचन ।।

धेनु जिमि वत्सल निज पय निर्मल बछड़न पान करावत हैं ।
सद्गुरु करुणाकर भक्तन के ऊर ज्ञानामृत छलकावत हैं।।
अति मंजुल वाणी जेहि सुन प्राणी निज सुख निर्मल पावत हैं।
सद्ग्रथंन सारा विमल विचारा भवनीधि पार उतारत हैं।।